मरजाद

भारतीय
प्रौढ़ शिक्षा
संघ
प्रकाशन

सज्जाद

डॉ० सतीश दुबे

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002

ग्रन्थांक : 131

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ : **मूल्य : 2.50**

संस्करण 1985

मुद्रक :
शान प्रिंटर्स,
शाहदरा, दिल्ली-32

यह नया संस्करण—

इस पुस्तक का यह नया संशोधित-परिवर्द्धित संस्करण आपके हाथों में है। किसी भी पुस्तक का पुनर्मुद्रण उस पुस्तक की लोकप्रियता का एक अकाट प्रमाण तो माना ही जाता है, साथ ही संतोष और प्रसन्नता की भी बात होती है। जाहिर है, ये बातें इस पुस्तक के साथ भी लागू होती हैं। कहा जा सकता है कि 'प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम' की भी यह एक बड़ी उपलब्धि है।

हम अपने उन नवसाक्षर पाठकों के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने इस उपयोगी पुस्तक को पूरी रुचि के साथ पढ़ा और इससे उन्हें बहुत-कुछ सीखने-समझने में मदद भी मिली। विश्वास है, पुस्तक के इस नये संस्करण के साथ यह सिलसिला और ज्यादा तेज़ी से आगे बढ़ेगा।

शुभकामनाओं के साथ—

—जे० सी० सक्सेना
महासचिव (अवैतनिक)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
'शफीक मेमोरियल'
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002
5 अगस्त, 1985

प्रस्तावना

प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में साक्षर बन जाना कोई इतना कठिन कार्य नहीं, जितना कठिन कार्य उस साक्षरता के ज्ञान को बनाये रखना है। साक्षरता के साथ अपने आपको जोड़े रखने के लिए नवसाक्षरों को अपनी रुचि के अनुसार साहित्य नहीं मिलता। नतीजा यह निकलता है कि वे लोग, प्रौढ़-शिक्षा केन्द्रों में जो कुछ सीखकर आते हैं, अनुवर्ती साहित्य के अभाव के कारण, सब कुछ भूल जाते हैं। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ इस दिशा में पहले से ही प्रयास करता आ रहा है। पिछले वर्ष इसने नव-साक्षरों के लिए दस पुस्तकें प्रकाशित की थीं। इस वर्ष भी भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ इसी साहित्य माला के अन्तर्गत पाँच पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है, जो उसके पहले प्रयास की दूसरी कड़ी है। यह प्रयास इस प्रकार के साहित्य के अभाव की पूर्ति के लिए एक ठोस कदम है। इन पाँच पुस्तकों में लेखकों ने जीवन की समस्याओं को अपनी सरल भाषा में प्रकट किया है। इन्हें पढ़कर नव-साक्षरों में न केवल अक्षर-ज्ञान को बराबर बनाये रखने की भावना बनी रहेगी, बल्कि अपनी कार्य-क्षमता को बढ़ाने और सामाजिक तथा राजनैतिक चेतना को ग्रहण करने का भी उनमें उत्साह पैदा होगा। अत: ये पाँचों रोचक रचनाएँ नव-साक्षर भाई-बहिनों का मन तो बहलायेंगी ही, साथ ही उनके जीवन के व्यावहारिक पक्ष में अपनी उपयोगिता भी साबित करने में सफल होंगी। क्योंकि इनमें उन्हीं बातों का वर्णन किया गया, जो उनके दैनिक जीवन के कई पक्षों से जुड़ी हुई हैं। ये सभी रचनाएँ 'राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम' के अन्तर्गत प्रकाशित की

गयी हैं।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ प्रौढ़ शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में अपने कर्त्तव्य का पालन करता आ रहा है। अपनी इन्हीं महान् परम्पराओं के अनुसार इसने नव-साक्षर भाई-बहनों के लिए अनुवर्ती साहित्य तैयार करने के हेतु इन्दौर में 6 मई से 9 मई 1979 को एक 'लेखक कार्यशाला' का आयोजन किया। इस कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन विक्रम विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति तथा हिन्दी के प्रख्यात कवि डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने किया। इसके समापन समारोह की अध्यक्षता, इन्दौर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ० देवेन्द्र शर्मा ने की।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय का बहुत आभारी है कि उसने इस कार्यशाला के आयोजन और पुस्तकों के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।

संघ उन सभी व्यक्तियों और संस्थाओं का भी आभारी है, जिन्होंने इस कार्यशाला की सफलता में अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया।

आशा है पाठकों को ये रचनाएँ अवश्य ही पसन्द आयेंगी।

—वी० एस० माथुर
अवैतनिक महासचिव

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
'शफीक मेमोरियल'
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली-110002

29 फरवरी, 1980

मरजाद

आसपास के दस गांवों में बड़ा गांव का महत्त्व बहुत ज्यादा है। एक हजार मकानों की बस्ती वाले इस गांव में ऐसा कोई परिवार नहीं है, जिसके मुखिया की दो पत्नियां न हों।

पहली पत्नी मर जाने पर आदमियों का दूसरी शादी कर लेना यहां बहुत ही आसान है। लेकिन औरत जात को पति के मर जाने पर दूसरी शादी करने की इजाजत नहीं है। यहां तक कि उसका पर-पुरुषों की ओर आंख उठाकर देखना भी सामाजिक अपराध माना गया है। ये लोग अपने-आपको देवताओं की उन परम्पराओं से जोड़ते हैं, जहां एक से अधिक पत्नियां रखना दूसरे लोगों के मुकाबले में ऊंचा माना जाता था। इसी कारण ये लोग उन लोगों की आलोचना से नहीं डरते जो इनके गांव को औरतबाज लोगों का गांव कहते हैं।

नाटे, काले, छरहरे बदन वाले रघुनाथसिंह गांव के पटेल हैं। उनकी राजपूती मूंछों और बड़ी-बड़ी आंखों का भय पूरे गांववाले मानते थे। लेकिन नियम यदि किसी ने भंग किया था तो इन्हीं रघुनाथसिंह ने। घर में उन्होंने एक

ही विवाहित पत्नी को रखा था। अधिक औरतें रखना वह फिजूलखर्ची समझते थे। इस एक औरत से उन्हें कोई सन्तान नहीं थी। कई लोगों ने उन्हें राय भी दी थी कि वे एक और शादी कर लें ताकि उनके घर का चिराग जलाने-वाला कोई-न-कोई मौजूद रहे।

लेकिन रघुनाथसिंह के तर्क ने इस बात को मंजूर नहीं किया। उनका कहना था कि सन्तान घर में चिराग नहीं जलाती बल्कि आदमी के नेक काम रोशनी करते हैं। एक घर में चिराग जलाने के लिए दो शादियों का झंझट करने की बजाय अपने कर्मों के द्वारा घर-घर में अपना चिराग जलाने की कोशिश करनी चाहिए।

उनकी ये बातें सुनकर बहुत से लोग उनकी हंसी उड़ाते। कुछ लोग ये योजनाएं बनाते रहते कि पटेल की मौत के बाद उसकी दौलत को कैसे हड़पा जाए। कुछ साथियों ने तो ऐसी योजनाएं बनानी शुरू भी कर दी थीं।

रघुनाथसिंह की पत्नी का नाम है लखूड़ी। नाम बड़ा अजीब है। इसलिए शादी के बाद पटेल ने इस बात का प्रचार गांव में कर दिया था कि यह नाम उनका दिया हुआ नहीं है। यह लखूड़ी नाम बचपन से ही उसकी मां का दिया हुआ है। यह स्पष्टीकरण देने की जरूरत इसलिए पड़ी कि लखू कहते हैं बंदर को, और लखूड़ी हुई बंदर की पत्नी। रघुनाथसिंह स्वयं बचपन में वृक्षों की डालियों पर बैठने वाले बन्दरों को ढेले मारकर चिढ़ाया करते थे—

लखू बन्दरिया चाबै पान।
उड़ गई टोपी, रह गया कान॥

लखूड़ी के माता-पिता ने उसका यह नाम इसलिए रखा था कि वह बचपन में इधर-उधर जंगलों में भटका करती थी और जामुन, आम आदि के पेड़ों पर चढ़ जाती थी। उसका प्रिय खेल भी वृक्षों पर चढ़ना था।

रघुनाथसिंह की लखूड़ी ने अपनी सेवा, प्यार से घर और खेतीबाड़ी के काम को बहुत ज्यादा प्रभावित कर रखा था। दरअसल, लखूड़ी के कारण ही रघुनाथसिंह दूसरी पत्नी नहीं ला पाए। जब कभी वह इस प्रकार की बातें करता, लखूड़ी घर में कलह, गृहस्थी का बोझ आदमी को कमजोर बनाने वाला कारण आदि अनेक बातें करके, इस ढंग से प्रभावित कर लेती कि रघुनाथसिंह को अपना इरादा बदल लेना पड़ता।

•••

रघुनाथसिंह ने मुश्किल से पचपन पार कर छप्पन पूरे किये थे कि लखूड़ी चल बसी। अपनी प्रिय पत्नी की अचानक मौत ने उन्हें शरीर से एकदम कमज़ोर बना दिया। उनकी बहन देखरेख के लिए बड़ा गांव आ गई। लेकिन उन्होंने महसूस किया कि सब की निगाह उनकी जायदाद पर है। एक दिन तो यह बात उनके सामने स्पष्ट ही हो गई।

उस दिन बहनोई जी उनके घर आये थे तथा बहन उनको रसोईघर में खाना खिला रही थी। तभी रघुनाथ को प्यास लगी। उन्होंने सोचा, बहन को आवाज देना ठीक नहीं लगेगा। वे खुद रसोईघर की ओर पहुंचे। उन्होंने

दोनों को बातें करते सुना। रघुनाथ थोड़ा उसी स्थान पर ठिठक गए।

बहनोई जी बहन से अपने घर लौट चलने का आग्रह कर रहे थे। पर बहन मना कर रही थी। आखिरी बात सुनकर तो उन्हें लगा कि क्या बहन का रिश्ता भी स्वार्थ पर टिका हुआ है। "धन-दौलत की दीवार को रिश्ते से हटा दो, वे टूटते जायेंगे," बहन कह रही थी।

"···दादा भाई, अब बूढ़े हो चले हैं। भाभी के बाद उनकी साल-संभाल करने वाला भी कौन है ? अरे फिर इस बहाने मैं यहां रहूंगी तो यहां का सारा कामकाज भी समझ में आ जाएगा। दादा भाई से अपने छोटू को गोद लेने के लिए भी कह दूंगी। इतनी सारी जमीन-जायदाद का कोई और मालिक बने, उससे अच्छा है कि हम लोग कोशिश कर देखें।"

रघुनाथसिंह का कंठ प्यास से सूखता रहा। पर वे गले को तर करने का इरादा छोड़कर औसारी में लौट आए। उन्होंने सोचा, बचपन में यही बहन उन्हें कितना चाहती थी। अब उसकी निगाह केवल मेरी जायदाद तथा उसको सन्तानों के हित पर टिकी हुई है। शायद इसी को दुनियादारी कहते हैं।

उसी दिन रात में उन्होंने यह पक्का निश्चय कर लिया कि वे दूसरा विवाह अवश्य करेंगे। घर में अपने उत्तराधिकारी के रूप में वे अपने ही किसी व्यक्ति को बिठायेंगे ताकि उनके बाद लोग कहें कि, यह रघुनाथसिंह की पत्नी है या उनका लड़का है।

उन्होंने सुबह ही अपने हरकारे बापू को भेजकर फुलहरा गांव के ठाकुर को बुला भेजा, जो अपनी कन्या का विवाह उनसे करना चाहते थे। ठाकुर ने रघुनाथसिंह के प्रस्ताव को मंजूर कर लिया। क्योंकि उनका इरादा ठाकुर से अपनी कन्या का विवाह करना ही नहीं था, बल्कि एक सम्पन्न परिवार से रिश्ता भी जोड़ना था।

उनकी इस नई पत्नी का नाम दुलारी था। मां-बाप ने बड़े दुलार से पाला था इसे। और रघुनाथसिंह से शादी करने में उनकी मंशा यही थी कि पटेल तो दस-पांच साल के मेहमान हैं। फिर तो बिटिया ही मालकिन बनेगी। खायेगी, पियेगी और ऐश करेगी।

रघुनाथसिंह की संतान-प्राप्ति की दबी लालसा तो पूरी नहीं हो पाई। पर दुलारी के पिता का गणित ठीक निकला। शारीरिक और मानसिक रूप से जर्जर रघुनाथसिंह मुश्किल से ही दुलारी के साथ करीब दो साल तक ठीक से बोलचाल तथा चल-फिर सके। इसके बाद तो एक के बाद एक अलग-अलग बीमारियों ने उनके शरीर पर इस प्रकार से आक्रमण किया कि उन्हें स्थायी रूप से खटिया पकड़नी पड़ी।

खटिया का उनसे प्रेम मृत्यु के बाद ही छूट सका।

रघुनाथसिंह की मृत्यु के बाद दुलारी के कामकाज में मदद करने के लिए फुलहरा से उसके पिता तथा भाई आ गए थे। खेती-बाड़ी का कामकाज ठीक तरह से चल निकला। उसे इन बातों की ओर से तो मुक्ति मिल गई थी। किन्तु अपने-आप से वह मुक्त नहीं हो पा रही थी।

दुलारी का नारी-मन जब कभी उसे झकझोर दिया करता, तो उसे लगता, मिले हुए तमाम सुख उसके लिए नरक-सी भयानक कल्पना हैं। खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने के अलावा उसे और किसी सुख की भी आवश्यकता थी। वह गांव के उस वातावरण में पली थी, जहां लड़की को शारीरिक सुख शादी के बाद केवल पति से ही प्राप्त होता है। उस विवाहित जीवन की परिभाषा उसे रघुनाथसिंह के बूढ़े तथा जर्जर मन ने समझाने की कोशिश की थी।...

खेत की मेड़ पर सोये बच्चों, अपने भाई-बहनों के साथ घूमते बच्चों या मां की गोद में दूध पीते बच्चों को जब वह देखती तो उसके भीतर एक हलचल और कसमसाहट शुरू हो जाती। उसे लगता, उसके औरत होने के साथ जो मां बनने का गौरव है, उससे वह वंचित है। यह ध्यान आते ही उसकी इस्पात जैसी तेज आंखों में सावन-भादों की झड़ी लग जाती। वह भगवान् से पूछने लगती, तूने ये इच्छाएं ऐसी कैसी बनाईं, जहां आदमी अपने तन पर तो काबू कर लेता है, पर मन पर नहीं कर पाता। किन्तु उसके सवालों का जवाब देनेवाला कोई नहीं था।

और वह सोचती यदि कोई उसके प्रश्नों का जवाब देनेवाला होता ही तो उसे रघुनाथसिंह नाम के बूढ़े व्यक्ति की पत्नी बनने का मौका ही क्यों मिलता ?

रघुनाथसिंह के समय से ही काम कर रहा हरकारा 'बापू' अपने साथ कभी-कभी अपने पांच वर्षीय भाई को ले आता, तो वह खुश हो जाती। उसे देखते ही वह खिल उठती तथा प्यार करते हुए न जाने कितनी चीजें दे डालती।

एक बार उसने बापू से पूछ लिया—तेरा लड़का है क्या ?

—जी नहीं मालकिन, छोटा भाई है, मेरी तो अभी शादी ही नहीं हुई। मुझे बहुत अधिक चाहता है। मना करने पर भी यह मेरे साथ चला आया।

—अच्छा किया, अपने साथ रोज ले आया कर।

बापू अपने कामकाज में लग गया, और वह बापू के बारे में सोचने लगी। वह इस परिवार से लम्बे समय से जुड़ा हुआ था। रघुनाथसिंह का तो इस पर असीम विश्वास था ही, पर लखूड़ी भी उसे नेक और ईमानदार आदमी मानती थी। उसने इस घर के बहुत-से उतार-चढ़ाव देखे थे। लखूड़ी और रघुनाथ सिंह की मौत का गवाह भी वह था और दुलारी के साथ रघुनाथसिंह की शादी का भी।

वह गांव की अछूत जाति से सम्बन्धित था, पर उसके हट्टे-कट्टे और गोरे-चिट्टे शरीर को देखकर गांव के मनचले बापू को सजीला जवान कहा करते थे। सिर पर छोटी-सी पगड़ी, अंगरखा तथा घुटनों तक की धोती में वह खूब फबता था। उसकी स्वामि-भक्ति अभी भी कायम थी। अपनी मालकिन की आज्ञा पालन करने के लिए वह जो-जान एक करने के लिए हमेशा तैयार रहता।

•••

चैत का महीना था। गेहूं की फसल कटकर खलिहान में आ गई थी। कुछ अनाज तैयार हो गया था तथा कुछ

होना था। पिछले कुछ दिनों से हवा बिल्कुल बन्द थी। उस पर बेमौसम बारिश की बूंदाबांदी कुछ दिन पहले हुई। इसी प्रकार की बूंदाबांदी ने कई लोगों की पकी-पकाई फसल चौपट कर दी थी। वह तो बापू का ही कमाल था कि उसने आकाश ताक कर, कटे हुए अनाज की हिफाजत कर ली थी।

बापू ने ही शहर से अनाज-उड़ाऊ पंखा खरीदने का प्रस्ताव रखा तथा बिना किसी विरोध के उसकी बात मान ली गई। पंखा खरीदने के लिए दुलारी के पिता तथा भाई तैयार गेहूं की गाड़ी भरकर ले जाएंगे तथा उसे बेचकर पंखा खरीद लाएंगे, यह तय हुआ।

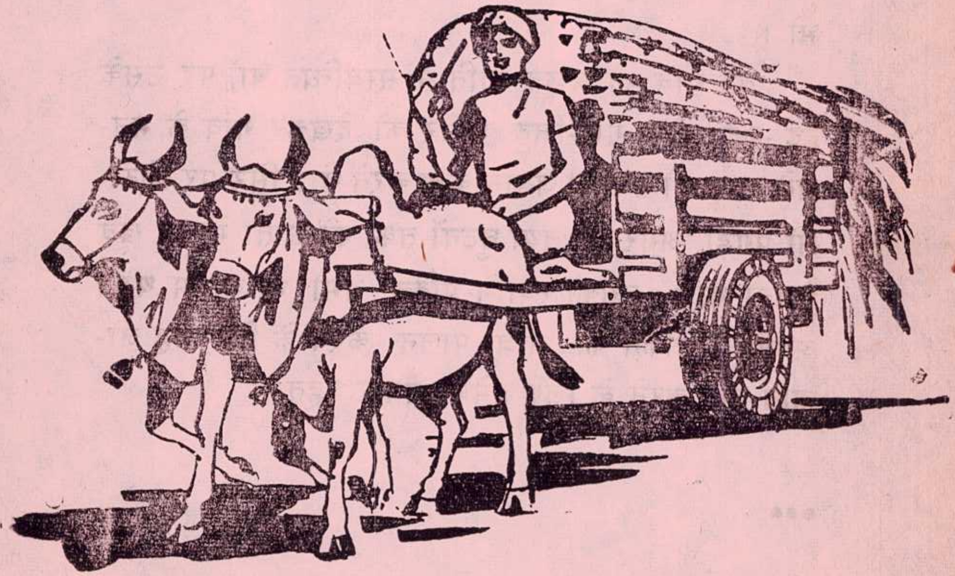

दूसरे ही दिन ये लोग गेहूं की गाड़ी भरकर शहर चले गये। खलिहान में रखे अनाज की देख-रेख करने के लिए

इन दिनों दुलारी को दो चक्कर लगाने पड़ते । इस अवसर ने बापू तथा दुलारी को अधिक निकट ला दिया तथा भय, संकोच और शर्म की खाई धीरे-धीरे समाप्त हो गई । दुलारी तथा बापू दोनों एक-दूसरे को अपना हमदर्द समझते । बापू का तो यह दावा हो गया था कि पूरे इलाके में उसकी मालकिन के समान कोई अन्य दयावान नहीं है ।

इधर मौसम का कोई ठिकाना नहीं था, उधर शहर गए दुलारी के पिता तथा भाई अभी तक लौटे नहीं थे । खलिहान में पड़ी फसल का कब किस रूप में नुकसान हो जाएगा, यह कोई निश्चित नहीं था । दुलारी को यह चिन्ता भी सताए जा रही थी कि वे लोग अभी तक लौटे क्यों नहीं ? दूसरी तरफ बापू सोच रहा था कि दाल में जरूर कुछ काला है । ठाकुरों को अब तक हर हालत में लौट आना चाहिए था । वैसे, उसे ठाकुरों की रंगीन तबीयत के बारे में मालूम भी था । वह यह भी सोच रहा था कि कहीं ठाकुर लोग शराब-वराब पीकर न आ जाएं ।

उसने अपने मन की बात मालकिन के सामने रखी भी, पर दुलारी ने कहा—नहीं, ऐसा होना तो नहीं चाहिए। कम से कम बाप और भाई को अपनी बेटी और बहन के साथ ऐसा नहीं करना चाहिए, पर हुआ वही जो बापू ने सोचा था । चार दिन बाद दुलारी के भाई तथा पिता शहर से लौट आये । पर पंखा उनके साथ गाड़ी में नहीं था ।

दुलारी के पूछने पर उसके पिता ने बताया कि गेहूं तो मंडी में बिक गया, पर बिक्री के रुपये गुण्डों ने लूट लिए, इसलिए पंखा खरीदा नहीं जा सका ।

—तो काका, इतने दिन क्यों लगा दिये ! दुलारी ने पूछा।

—दिन क्या ? हम क्या कोई नौकर-चाकर थे जो लूट-पाट के बाद सीधे घर चले आते। पुलिस में रिपोर्ट लिखाई। गुण्डों की ढूंढ़-ढुंढ़ाई हुई। लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला।

—क्या काका, वहां ऐसा ही अन्धेर चलता है ?

—अरे ऐसा ही अन्धेर क्या, वहां अन्धेर ही अन्धेर चलता है। तुझे अब क्या समझाऊं अपने घर की गाड़ियां भी जब जाती हैं, तब भी कई बार ऐसा ही होता है।

—गुण्डों ने मारपीट तो नहीं की काका ! मारपीट कैसे करते, तेरा भाई जो साथ था। वह तो जेब ही काटी, आमने-सामने होते तो मजा चखाता। दुलारी के भाई ने मूंछों पर ताव देते हुए कहा।

—पर काका ने तो अभी कहा कि रुपये लूट लिए और तुम कह रहे हो, जेब कटी।

—तेरे कहने का मतलब ये है कि तुझे हमारी बातों पर विश्वास नहीं ?—काका गुर्राकर बोले।

—बाप पर अविश्वास कौन करेगा काका, मैं तो आप से केवल पूछ रही हूं !

दुलारी का मन शंका से घिरने लगा। रह-रहकर उसे दो दिन पहले बापू द्वारा कही गई बातें याद आ रही थीं।

बापू ने, जो इस पूरी चर्चा के दौरान वहीं खड़ा था, मालकिन की ओर देखा तथा बोला,

—मालकिन आप कहें तो ठाकुर साहब से मैं कुछ बातें

करूं ?

—उससे क्या पूछ रहा है ? बोल क्या कहना चाहता है ? ठाकुर ने आंखें फाड़ते हुए बापू से कहा ।

—ठाकुर साहब, बात ये है कि मुझे तो आपकी बात पर विश्वास नहीं आता ।

—विश्वास नहीं आता । यानी तेरे लेखे हम चोर हैं और तू साहूकार !

—मैं आपको चोर कैसे कह सकता हूं, और आप ऐसा काम कर भी कैसे सकते हैं ? बेटी का धन खाने वाला तो सीधा घोर नरक में जाता है ।

—तो तू कहना क्या चाहता है ?

—मेरा तो कहना यह है कि तुम लोग जैसा कह रहे हो, ऐसा होता नहीं । तुम तो दो थे । पर मैं अकेला कई बार शहर गाड़ियां लेकर गया हूं और मालिक को पूरे रुपये लाकर दिये हैं, पर मुझे तो कभी ऐसे चोर-गुण्डे शहर में नहीं मिले ।

दुलारी का भाई तैश में आ गया । वह हाथ उठाने ही वाला था कि दुलारी ने रोक दिया ।

—मालकिन, आप रोको मत । इनको मारने दो । पर मैं इनसे यह जरूर पूछूंगा कि शहर के चोर-गुण्डों की पहचान गांव के ठाकुरों से ही ज्यादा क्यों है ?

काका ने कुछ जवाब देने की बजाय उसे झिड़क दिया ।

चुप रे ! बड़ी बात बघार रहा है । छोटे मुंह बड़ी बात करते शर्म नहीं आती तुझे । आगे से कभी ऐसी बातें कीं

तो लात मारकर निकाल दूंगा। सूअर की औलाद। बात करने चला है.........।

—काका, बापू भले ही मेरा नौकर है। पर मैं उसे अपना गुलाम नहीं मानती। ऐसे बुरे बोल बोलना तुम्हें शोभा नहीं देता।

—तो तू भी एक नौकर की तरफदारी करने लगी।

—काका, नौकर भी तो सही बात पूछकर मेरे कारण तुमसे गालियां सुन रहा है।

मालकिन को अपनी तरफ बोलते देख, बापू उत्साह से भर गया। दुलारी के स्वर में स्वर मिलाते हुए बोला—

—मालकिन बताऊं रुपये कहां गये! ठाकुर साहब अपनी बेटी के रुपयों से शहर की सैर कर आये हैं!

—दुलारी, इसको समझा, नहीं तो अभी खून-खराबा हो जाएगा।

—खून-खराबा तुम क्या करोगे ठाकुर साहब, तुम्हारा तो अभी नशा ही नहीं उतरा है। तुम्हारे कपड़ों और मुंह से तो अभी तक दारू की दुर्गंध आ रही है और माथे पर लगा पांवों का महावर क्या चम्पाबाई की लात का निशान नहीं है। सही बात सुनकर ठाकुर साहब की हिम्मत हवा हो गई तथा माथे का पसीना पोंछते हुए बोले—

—नमकहराम, ज्यादा बड़बड़ की तो मार डालूंगा, याद रखना। और वह कुल्हाड़ी लेकर बापू पर झपटे।

दुलारी एकदम बीच में आ गई और चिल्लाते हुए बोली—काका, तुम अपनी मौज के लिए मेरी जान ले लो, मैं तुम्हारी बेटी नहीं, धंधे की चीज हूं जिसके बल पर तुम

शहर की सैर करना गलत नहीं समझते ।

बापू को नहीं, तुम मुझे मार डालो। मौत तो मुझे चाहिए। जिन्दा मौत तो तुम दे ही चुके हो। अब मरी मौत भी तुम दे डालो लो चलाओ कुल्हाड़ी…!

काका, कुछ बोले नहीं, कुल्हाड़ी चुपचाप फेंककर आंगन में आकर खड़े हो गए। दुलारी की कठोर तथा साफ बातों ने उनके कान खड़े कर दिए थे ।

इसी बीच दुलारी का भाई भी गाड़ी-बैल ठिकाने लगाकर आ गया था। पिता-पुत्र ने वापस अपने गांव लौट चलने की सलाह की और दूसरी रात होते न होते वे चले गये ।

दुलारी ने न तो कोई प्रतिवाद किया, न ही जाते समय

उनसे किसी प्रकार की बातें करना उचित समझा ।

•••

इस घटना के बाद दुलारी ने घर-खेत की पूरी व्यवस्था अपने जिम्मे ले ली । उसका दूसरा तथा अन्तिम सहयोगी था बापू…।

दुलारी के काका तथा भाई के चले जाने के बाद गांव वालों ने समझा था कि अब तो ठकुराइन को उनके आसरे ही रहना पड़ेगा । एक औरत-जात खेती-गृहस्थी की बहुत सारी बातों को क्या समझेगी ! किन्तु जब उसने बिना किसी की चिन्ता किये अपना काम खुद देखना शुरू कर दिया तो कई लोगों की छाती पर सांप लोटने लगे । बहुत से लोगों ने यह भी प्रयास किये कि जैसे भी सम्भव हो उसके कार्यों में कठिनाई पैदा की जाए । पर दुलारी के आत्म-विश्वास के कारण सब को झुकना पड़ा ।

पूरे गांव में यह पहला ही मौका था, जब बहू बनकर आई किसी महिला ने खुलेआम इस प्रकार अपना काम शुरू किया हो । जब ग्रामीणों को अपनी उपेक्षा स्पष्ट दिखने लगी तो उन्होंने उन बातों पर ध्यान रखना शुरू कर दिया, जिनके कारण उसे समाज में नीचा दिखाया जा सके ।

अब अक्सर उसे खेती-गृहस्थी के कामकाजों के बारे में गांववालों के सामने बापू को कुछ कहना पड़ता । या तो वे दोनों मिलकर किसी विषय पर सलाह-मशविरा करते या

कभी कोई काम साथ-साथ करते । बस यही एक बात गांव-वालों की पकड़ में आ गई ।

कुछ बुजुर्गों तथा गांव की इज्जत के ठेकेदारों को गांव की बहू को इस प्रकार पराये पुरुष के साथ मेलजोल नागवार लगा । पर दुलारी न जाने कौन-सी मिट्टी की बनी हुई थी कि उसने इन सब बातों की चिन्ता नहीं की। उसे मालूम था कि अब उसे इसी प्रकार परेशान करने की कोशिश की जाएगी ।

दुलारी के इस व्यवहार से चिढ़कर पंचों ने उसके पीछे दो लोग लगा दिए जो उसके पूरे दिन के कामकाजों की सूचना उन्हें देते ।

•••

एक दिन गन्ने के खेत में सिंचाई करवानी थी । वह मज-दूरों के काम की देखरेख कर रही थी तथा बापू रहट चलाकर कुएं से पानी दे रहा था । बारह बजे तक यही काम चलता रहा । दोपहर होने पर उन्होंने काम बन्द कर दिया तथा अपना-अपना खाना लेकर दोनों खेत की मेड़ पर आकर बैठ गये । दुलारी तथा बापू दोनों आमने-सामने बैठे हुए थे तथा कुछ दूरी पर मजदूरनियां हंसी-ठिठोली कर रही थीं ।

एक मजदूरनी ने दूसरी मजदूरनी की पीठ को घोड़े की पीठ बना लिया था तथा 'टिच्च-टिच्च' कर उसे बच्चों की तरह हांक रही थी ।

उसे यह देखकर हंसी आ गई, बापू भी खिलखिलाकर हंस पड़ा।

—चलो अब काम शुरू करें—दुलारी ने बापू से कहा तथा उठ खड़ी हुई। पर साड़ी का पल्लू पैर में आ जाने के कारण गिर पड़ी। बापू ने उसे उठने में मदद की।

बस फिर क्या था! दुलारी पर नजर रखनेवालों ने पूरे गांव में यह बात फैला दी कि ठकुराइन खेती-बाड़ी के बहाने नौकर के साथ खेत-खलिहान में मौज मारा करती है।

शाम को जब वे दोनों गांव में लौटे तो, घर-घर में उनकी चर्चा थी। जहां देखो, वहीं यही खुसर-पुसर।

दूसरे दिन पंचायत बैठी। दुलारी तथा बापू को बुलवाया गया। गांव के पंच—जनेऊधारी पंडित थे तथा सरपंच ठाकुर। दोनों ही बापू से चिढ़े हुए थे।

जब सब लोग इकट्ठे हो गये तो बापू का मजाक उड़ाते हुए सरपंच ने पूछा—

—इस तरह चोरी-छिपे यह पाप कब तक चलता रहेगा बापू! पंचायत चाहती है कि तुम-जैसी जाति के आदमी से ठाकुर घराने की एक बेवा की शादी कर दी जाए। बोलो तुम राजी हो ना?

अपनी मालकिन के चरित्र पर इस प्रकार खुलेआम लगाये जा रहे लांछन को सुनकर वह तिलमिला उठा। पर उसे पंचायत का महत्त्व मालूम था। उसने सोचा कि यदि उसने संयम से काम नहीं लिया तो पंचायत-माता के अपमान के कारण उसे गांव से निकाला जा सकता है।

वह विनम्रता से बोला,

—पंचायत-माता ऐसा क्यों बोल रही है, मुझे मालूम नहीं !

—हां, तुम्हें क्यों मालूम होने लगा। लेकिन हमें तो मालूम है। जो भी तुमसे पूछा जाए, उसका तुम ठीक-ठीक से जवाब दो, नहीं तो अभी जुर्माना लगाता हूं। सरपंच साहब गरजे।

बापू तिलमिला उठा। पर फिर संयत हो गया, हाथ जोड़कर साफ-साफ शब्दों में बोला—

—महाराज ! आप मुझ-जैसे नीच जात के आदमी से कुछ भी बोल लें, पर एक अच्छे घराने की बहू पर गांव की चौपाल में ऐसे लांछन लगाना अच्छा नहीं। पंचायत-माता के पास क्या सबूत है कि मालकिन से मेरा कोई दूसरा संबंध है ?

—बापू, सयाना बनकर गांव के लोगों की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश मत कर।

—क्या कह रहे हैं महाराज···मैं तो मालकिन का नौकर हूं। उनका नमक खाता हूं। अपने बूढ़े मां-बाप और भाई-बहन को पालता हूं। इनके इस घर का मुझ पर बहुत अहसान है।

—बस-बस बापू, ज्यादा भाषण मत झाड़ो ! पूरा गांव जानता है कि तुम एक बेवा को बहकाकर उसकी जमीन और धन-दौलत हथियाना चाहते हो, और उसकी जिन्दगी तबाह करना चाहते हो !

—धन्य हो पंच महाराज, आपका सोचना भी न्यारा

है। मैं इस भरी सभा में गंगाजली उठाकर कह सकता हूं कि मैंने कभी मालकिन के भले के अलावा कोई और बात सोची भी नहीं।

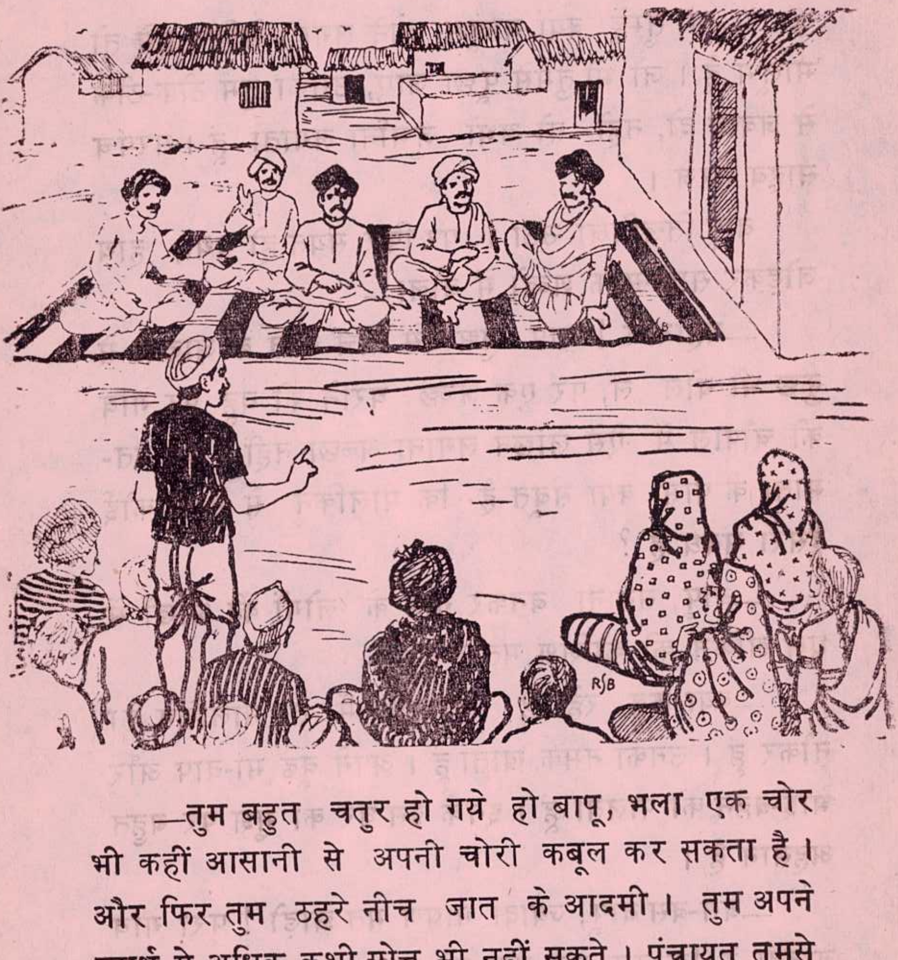

—तुम बहुत चतुर हो गये हो बापू, भला एक चोर भी कहीं आसानी से अपनी चोरी कबूल कर सकता है। और फिर तुम ठहरे नीच जात के आदमी। तुम अपने स्वार्थ से अधिक कभी सोच भी नहीं सकते। पंचायत तुमसे जानना चाहती है कि आज दोपहरी में ठकुराइन के साथ खेत में तुम क्या कर रहे थे ?

—खेत में ?...खेत में मैं रहट चलाकर पानी दे रहा

था और मालकिन मजदूरों से काम करवा रही थीं।

—हूं ऽऽऽ और हंसी-ठिठोली, मजाकबाजी तथा गांव की मरजाद के विपरीत काम कौन···मैं कर रहा था ? तुम क्या समझते हो ? गांव में तुम्हारा ही राज है, तुम कुछ भी करो, कोई देखनेवाला नहीं है। तुलसी बाबा ने ठीक ही कहा है : 'खल उपकार विकार फल, तुलसी जान जहान !'

बापू चिढ़कर बोल उठा—महाराज, गांव की मरजाद को बिगाड़नेवाला मैं नहीं, आप-जैसे ऊंची जात वाले ही हैं। मुनिया भीलन को अपने घर में बिठाकर उसकी जमीन हड़पने का सपना देखनेवाला मैं नहीं, आप हैं। उसे··· महाराज क्या भक्तिन समझकर गले लगा रखा है !

पंच साहब की यह बात वैसे तो सबको मालूम थी, पर किसी का साहस नहीं हुआ था कि उस पर किसी प्रकार की टिप्पणी कर सके।

आज जब खुले तौर पर बापू ने यह बात उठाई तो पंचायत में हलचल मच गई। एक तरफ बैठा युवा श्रोता वर्ग जोरों से खिलखिलाकर हंस पड़ा तथा महिलाएं नीचा सिर करके जमीन ताकने लगीं।

सरपंच साहब सकपका गए। दबे कंठ से बोले—चुप रहो, अधिक बको मत। जानते हो पंच में ईश्वर बसते हैं। अभी न्याय हो जाता है।

सभी पंचों में आपस में बातचीत होने लगी, ठाकुर साहब बोले,

—तुम्हारे बारे में वह जो कुछ बोला, मुझे अच्छा नहीं

लगा। आज तुम्हारे बारे में वह बोला है। कल मेरे बारे में दूसरा बोलेगा। लोगों की इसी प्रकार जबान खुलती रही तो हम कर चुके पंचायत का काम !

—हरे राम ! हरे राम !! क्या जमाना आ गया है। नीच जात का आदमी इतना मुंह खोल सकेगा, इसकी कल्पना भी नहीं थी।

थोड़ी देर बाद यह निर्णय दिया गया कि—बापू का चाल-चलन अच्छा नहीं है। गांव की मरजाद बनाये रखने के लिए पंचायत उसे गांव छोड़ने का आदेश देती है।

इस निर्णय को सुनते ही दुलारी पंचों के सामने आई और खूब गुस्से में बोली,

—तुम सरीखे बुद्धिमान ही न्यायी बन जाएंगे तो हो जाएगा गांव का कल्याण। घर जाओ महाराज, नवेली रास्ता देख रही होगी···और तुम सब कान खोलकर सुन लो, न तो बापू गांव से जाएगा और न ही मेरे घर का काम छोड़ेगा। जिसे उसका गांव में रहना खलता हो, वे चाहें तो गांव छोड़कर चले जाएं।

•••

दुलारी का यह रूप गांव में एक अद्‌भुत घटना थी। सब लोग इस घटना को बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर रहे थे। गांव की औरतें, जो वहां मौजूद थीं, स्पष्ट रूप से कहती फिर रही थीं कि दुलारी बहू को देवी का इष्ट है। साधारण औरत की क्या मजाल कि इतने सारे लोगों के बीच खड़ी

हो जाए और जो चाहे बोल दे।

युवा-वर्ग तो पुराने ख्यालों वाले पंचों के खिलाफ हुई इस घटना से बेहद प्रसन्न था।

रामलखन तो पूरे गांव में पटकनी देने की मुद्रा का प्रदर्शन कर, पंचों की हंसी उड़ाता रहा। एक समूह ने तो पंच के लड़के को घेर लिया और लगे चिढ़ाने :

—क्यों रे, तेरा बाप पचास की उमर तक औरतें ही लाता रहेगा, या तेरी भी ब्याह-शादी के बारे में कुछ सोचेगा···बुढ़ापे में औरत लाये महाराज और वह भी भीलन ! राम···राम···!

पंचों को मुंह छिपाने की जगह न रही। आठ दिन तक इधर-उधर दुबके रहे। अन्त में सब ने निर्णय लिया कि पुलिस थाने में रिपोर्ट कर दी जाए।

पुलिस की धारा के अन्तर्गत यद्यपि कोई ठोस केस नहीं बनता था, फिर भी थानेदार साहब ने सोचा कि चलो इस बहाने गांव की तफरी ही हो जाएगी और अपने आसा-मियों से मिलना-जुलना भी हो जाएगा।

गांव में थानेदार साहब के आने के समाचार सुन, पंच तथा सरपंच गांव के बाहर तक उनकी अगवानी के लिए आए। पंडितजी—पंच ने उनकी घोड़ी की लगाम थामी तथा सरपंच नीचे उनके साथ-साथ चलने लगे। गांव की अनेक कठिनाइयों पर चर्चाएं होती रहीं। बातचीत करते हुए तीनों सरपंच के निवास तक पहुंचे।

शाम को 'दुलारी-बापू केस' के लिए थानेदार साहब चौपाल पर पधारे थे। उनके आसपास पंच, सरपंच तथा

अन्य लोग बिराज गए। दुलारी तथा बापू को बुलवाया गया। बापू की रूह पुलिस वालों से बहुत ज्यादा कांपती थी। मारपीट के नाम से वह कांपने लगता था। फिर भी उसने थानेदार साहब की लाल-लाल चढ़ी हुई आंखों का सामना करते हुए साहसपूर्वक अपने शब्दों में बयान दिये।

थानेदार ने उसके साहस को बदमाशी का नाम देकर पटेलिन को बुलवाया तथा फटकारते हुए बोले,

—पटेलिन ! ऐसे काम करते हुए, जिससे गांव की इज्जत को धब्बा लगता हो और तुम्हारा समाज कलंकित होता हो, तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

दुलारी आज कमर कसकर बयान देने आई थी। उसे रास्ते में जो भी औरतें मिलीं, उनसे उसने स्पष्ट कह दिया था कि—आज आखिरी फैसला करके ही मानूंगी। मुओं ने दिन-रात का खाना-पीना हराम कर रखा है।

जब थानेदार साहब ने इस प्रकार उपदेश दिया तो वह उन पर उबल पड़ी—

साहब, आपने गांव की इज्जत पर धब्बा लगाने की जो बात कही है ना, उसके

बारे में, मैं एक बात गांव के सबसे बूढ़े बा रामाजी से पूछना चाहती हूं,

—क्या पूछना चाहती है बहू, रामाजी ने धीरे से गरदन हिलाते हुए पूछा,

—मैं आपसे यह पूछना चाहती हूं कि एक कम-उम्र की लड़की की शादी एक बुड्ढे से करके गांव ने क्या अपनी इज्जत में चार-चांद लगा लिये हैं।

—नहीं ऐसा तो नहीं···यह रघुनाथ ने गलत किया।

—वे गलत कर रहे थे तो बा तुम्हारी पंचायत ने गांव की इज्जत बनाने लिए उन पर दबाव क्यों नहीं डाला। उनसे यह क्यों नहीं कहा कि अपनी बेटी की उम्र की लड़की से शादी करना भगवान के यहां भी पाप है।

—वह सब छोड़ो, लेकिन तुमको नीच जात के आदमी के साथ···सरपंच अपना वाक्य पूरा भी नहीं कर पाये थे कि वह फिर उबल पड़ी। आदमी नीच जात से नहीं, करम से होता है। बापू के संस्कार गांव के पंडित से कहीं अच्छे हैं, और गांव के पंडित का व्यवहार जिन्दे जानवर की खाल खींचने से भी खराब है।

—वाह पटेलन! तुम तो किसी महात्मा जैसे उपदेश दे रही हो। तुमको मालूम होना चाहिए, जुर्म की किताब के अनुसार दण्ड ही खराब काम करने की सजा है। थानेदार साहब ने रौब झाड़ा।

जुर्म! जुर्म तो मैंने किया नहीं है साब। पर बचपन से यह जरूर देखती आ रही हूं कि जुर्म आप करते हो। तम लोग यहां आते हो जुर्म दबाने के नाम पर और गांव

की इज्जत पर जो कीचड़ उछालते हो, क्या वो गुनाह नहीं है ?

तुम लोग क्या करते हो, यह मैंने कई बार अपने बाप के घर देखा है। एक औरत के मुंह से मत निकलवाओ।

दुलारी द्वारा इस प्रकार आंखें तरेर कर लगातार बोलने से सभा में मुर्दनी छा गई। थानेदार साहब मुंह खोलकर कुछ बोलना चाह ही रहे थे कि, दुलारी ने फिर हुंकारी भरी, मैं जुलुम करनेवालों के नाम बताऊं थानेदार साब ! यहां पर जो ये पगड़ी बांधकर लोग बैठे हैं ना—ये सब सरकार का कानून तोड़ने वाले लोग हैं। तुमको नहीं मालूम पर मेरे मामा ने एक बार मुझे बताया था कि एक औरत के रहते दूसरा ब्याह करने पर कानून सजा दे सकता है। पर शायद तुम्हें कानून की यह बात नहीं मालूम।

—बस बस चुप रे बाई, इस प्रकार लपट-लपट बोलकर क्यों गांव की इज्जत ले रही है ? कोई सुनेगा तो क्या कहेगा ? मरजाद भी आखिर कोई चीज है कि नहीं—पंडित जी ने उसे फटकारते हुए कहा।

—ससुरजी, हलाल का बकरा भी एक बार बिना कसूर मारे जाने पर चिल्लाता है। तुम लोगों ने तो एक जानवर से भी छोटा मुझे मान लिया है। मेरी आबरू ढंकना आपका काम है। उसे ढंकने के बजाय आप मुझे बोलने भी नहीं देते, बोलती हूं तो कहते हैं मरजाद चली जाएगी ! वाह !…वाह रे…न्याय।

—अच्छा-अच्छा ठीक है, हम देख लेंगे, थानेदार ने उसे आश्वस्त किया।

उसने एक बार थानेदार की ओर देखा, फिर गांव के लोगों की ओर, और फिर थानेदार से बोली, सुन लीजिए थानेदार साहब, पूरे गांववालों के सामने मैं कह रही हूं, बापू से मैंने अपने दिल का सौदा किया है, थानेदार साहब या गांव वालों के दिल का नहीं, इसलिए इस मामले में आपको बोलने का कोई भी हक नहीं।

गांव के लोगों ने किसी औरत को सार्वजनिक मंच पर इस प्रकार बोलते पहली बार देखा था। सभी लोग काना-फूसी करने लगे।

थानेदार का तो हाल ही बुरा हो रहा था। अपनी खुली आलोचना सुनकर वह दंग रह गया। बात सच थी। पोल खुल जाने का उसे भय था, इसलिए मामला निबटाने की नीयत से वह बोला :

—लेकिन पटेलिन, ऐसे काम करने से क्या तुम्हारी इज्जत गांव में बढ़ जाएगी ? क्या तुम्हारा समाज तुम पर थू-थू नहीं करेगा ? जरा सोचो तो ऐसा करने से क्या देवता-समान तुम्हारे पति की बदनामी नहीं होगी ?

—थानेदार साहब, आप भी कौन-से गांव की बातें कर रहे हैं ? जिस समाज ने भोज खाकर मेरी जिन्दगी के साथ खिलवाड़ किया है, उस स्वार्थी समाज की मुझे परवाह नहीं है। मेरी देख-रेख, मेरा गुजारा करनेवाला यहां कोई नहीं है। इस कमी को पूरा करने के लिए, अगर मैं कुछ करती हूं तो गांववाले उसे गुनाह क्यों समझते हैं ?

थानेदार से बोलते न बना। गांववालों में भी उनसे तर्क करने की शक्ति नहीं रही। बात सही थी, सबकी समझ

में आ गई थी।

गांव के पंचों तथा थानेदार ने निर्णय देते हुए दुलारी से कहा।

—तुम ऐसा करो, बापू को अपने यहां की नौकरी से निकाल दो। तुम नातरा (दूसरा विवाह) कर लो, लेकिन जात की मरजाद मत बिगाड़ो।

—अनचाहे जात के आदमी से नातरा करने की बजाय, पहचान के आदमी से ब्याह करना अच्छा है।

मैं जानती हूं कि बापू मेरे बाप की तरह लोभी नहीं हैं। महाराज की तरह अन्यायी नहीं हैं। ऐसे आदमी को यदि मैं अपना घरवाला बनाती हूं तो कोई गलती नहीं करती।

और दुलारी ने सभी लोगों की ओर निगाहें डालकर कहा।

—पूरा गांव सुन ले...बापू आज से मेरे घर में रहेगा और वह अब मेरा नौकर नहीं, बापू पटेल है, जिसकी मर्जी हो माने, जिसकी मर्जी नहीं हो वो ना माने।

इतना कहकर दुलारी, उस स्थान की ओर बढ़ी जहां बापू खड़ा था और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर पंचायत का बहिष्कार करती हुई, घर की ओर चली गई।

सभी लोग चुपचाप देखते रहे। लग रहा था—दुलारी ने वशीकरण मंत्र से सब को काठ का पुतला बना दिया हो। थोड़ी देर बाद थानेदार साहब को होश आया और वे बिना किसी से कुछ बोले शहर की ओर चल दिये। □□□

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
'शफीक मेमोरियल'
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002